

Inhalt

| | |
|--|-----------|
| VORWORT | 7 |
| ZU DIESEM BUCH | 7 |
| WIE SCHICKSALE IN DER FAMILIE WIRKEN | 8 |
| TEIL 1: VERHAFTET..... | 13 |
| WARUM ERINNERN?..... | 13 |
| IN DER KOLONNE | 14 |
| NACHTQUARTIER..... | 16 |
| SCHWEINEFUTTER..... | 19 |
| TRANSPORT..... | 21 |
| TEIL 2: RECHTLOS..... | 25 |
| IM BEZIRKSGEFÄNGNIS..... | 25 |
| SCHEINPROZESSE | 26 |
| SEHNSUCHT UND HAFTPSYCHOSE..... | 29 |
| LETZTE KONTAKTE..... | 30 |
| ERNEUTE VERLEGUNG..... | 32 |
| SECHS IN EINER ZELLE | 34 |
| ENTLASSUNGSGERÜCHTE..... | 40 |
| IM WAGGON | 43 |
| ERINNERUNG UND GEGENKRAFT | 47 |
| NACH SIBIRIEN?..... | 49 |
| TEIL 3: ISOLIERT | 55 |
| „ENTLASSUNGLAGER“ UND ZUVERSICHT..... | 55 |
| LAGER-ORGANISATION..... | 57 |
| WER KANN MALEN? | 60 |
| VERGÜNSTIGUNGEN..... | 61 |
| WERFT STEINE AUF MICH! | 62 |
| DAS SYSTEM IM LAGER | 64 |

| | |
|---|-----------|
| WERTE DES LEBENS..... | 67 |
| INNERER LEBENS-ERHALT | 68 |
| IMMER WIEDER VERTRÖSTUNG! | 70 |
| WER DARF RICHTEN? | 71 |
| NACHWORT | 75 |
| PERSÖNLICHE BEGEGNUNGEN IN MÜHLBERG..... | 75 |
| PARALLELEN DES SCHICKSALS? | 78 |
| ANHANG | 81 |
| GEDICHTE AUS MÜHLBERG..... | 81 |
| <i>Lagerjahre</i> | 82 |
| <i>Mondnacht</i> | 83 |
| <i>Erntedank</i> | 84 |
| <i>Auch die schweren dunklen Stunden</i> | 86 |
| <i>Erhebe den Blick</i> | 87 |
| <i>Die letzten Junitage 1947</i> | 90 |
| <i>Der Gefangene</i> | 92 |
| BIOGRAPHIE PAUL WEISSHUHN | 97 |
| DANK..... | 101 |
| LITERATUR UND WEITERFÜHRENDE INFORMATIONEN..... | 103 |